

॥ हारिर्दिलयश्चाख्या येन विज्ञावाप्रा
॥ इंभ ॥ पन सुमो राव ठवे या सुमो र
॥ २ ॥



1

५॥

(2)

श्री गणेशाय नमः ॥ जय जय श्री ^ठ हंस आत्माय रामा ॥ उपा
धी रहित पुर्ण ब्रह्मा ॥ मंगळ रूपामंग धामा ॥ पुणकामा सर्व
शा ॥ १ ॥ अमंगळ हे माही काया ॥ मंगळ नाम तु से ये दुराया ॥
ते नाम मा से हृदई लीहनीया ॥ तु स्यामी याप वित्र करी ॥
॥ २ ॥ जैसा का गद खर गटा जाण ॥ यासन सी वतिसो वळे
ब्राह्मण ॥ यावरितु सेना मकाले खण ॥ मंगपुजे नहृदई
परिति ॥ ३ ॥ तैसे हे अमंगळ गरीर ॥ शुक्ल श्रोणीत अपवी
त्र ॥ अस्तीमांस मळ मुत्रा यणची करुणी भरलेसे ॥ ४ ॥ जन
त जन्मीच्या पापेचोळी ॥ काम क्रोध लोभे खर करले ॥ श्लेष्म
दुगंधीचे बोतले ॥ कीमीचे भरले सदने ॥ ५ ॥ केवळ अ
स्तिची मोळी ॥ सीरणे टापिटा पिबां चली ॥ मांस स्ने

पीली ॥ साव रिमाउनी वचेचि ॥ ६ ॥ जो रज स्वके चं बीटाळ ॥
(3) सर्वा माली जमंगळ ॥ या विटाळचे फळ ॥ वाटले केवळ मळ
मुत्रि ॥ ७ ॥ जैसे हे जमंगळ पाहिजे रीतुझे नामली हि सी हृद
श ॥ मग या येवटे पवीरना हि ॥ नुझे भजणी ला विटां ॥ ८ ॥ ज्या
वरी मुद्रा करिरा जेंद्र ॥ तें पथी ती वंये होये पत्र नै सामाझे
हृदई तुंया दवेद्रा ॥ राहाण करिकं ॥ ९ ॥ कागद उतायंत
मोळें हिना ॥ परि मुद्रा उमट नाव दि विजण ॥ नै सामी ज सुनदि
न ॥ करि पावन येदु विरा ॥ १० ॥ नुऊ माळे संगे नंत ॥ कठिद्याली
ती भाग्यवंत ॥ किं सुमना संगे मोळ चढत ॥ तैलास जैसे वीसेध
पै ॥ ११ ॥ राजा बैसी जे सांकासनी ॥ तो नमस्कारि जे थो रलास

नी॥ मा सितनुचक्रपाणी॥ करि पावणतै सीची॥ १२॥ ब्रह्मानंदा
येदुकुळटिळका॥ मीतुझ्यापाईच्यापादुका॥ परियावंद्यसकळि
का॥ चरणप्रसादेतुसीया॥ १३॥ जोसो जेदंरावा जोध्यासंपतां॥
मथुरेसमिपकमको द्रवपीता॥ उपवनीराहिलातनुना॥ नंदगे
कीयासमवेत॥ १४॥ यावधिलाकुश्चालीलतेथुना॥ प्रवेश
लाहोराजभुवण॥ कंसराधासकरणनमन॥ वर्तमानसांगीतला
॥ १५॥ ह्मणेघेउणजालाजोबज्जोबना॥ जोयादवकुळमुगुटर
ला॥ जोकांनरवीरपंच्यानना॥ वीद्वजनवंदितितया॥ १६॥ जो
त्रीभुवनवंद्यसर्वासजायी॥ जोजेजेजितजेदुतवीर्यी॥ पर

(3A)

मतेजं स्त्रीप्रतीस्यतिो येदु वीर्यजाणीला ॥१७॥ तमारिकंद्ये
 च्याहं ययज कि॥ जेणे काकीयार गडिला पायांत की॥ जेणे
 क्षणें पुतना शोखीली॥ नोवनमाकी जाणीला ॥१८॥ त्रणावती
 के शिजगबग॥ प्रलंबधे तुकरा धीला सवेग॥ जो निज भ
 क्त हं दयार विंद भंग॥ नो श्रीर ग जाणीला ॥१९॥ जो कमळ
 भकमळ पत्रा॥ क्षपद्रोद्ग वजाणा वीरु पाक्ष॥ ज्या सीध्यांति नो स
 र्वसाक्ष॥ परमपुरुष जाणीला ॥२०॥ आला जो कुंण श्री छह्हा॥ दच
 कलंकं साचं अंतःकरण॥ बुधीची तडाहंकार मं॥ ॥६॥ छसप
 जाहाला ॥२१॥ कंसासीला गले हस्थिपिसें॥ पदार्थ मात्र हरी

ने

(५)

ना

हा रित्तप दिसे ॥ आ पले जांन रिं ह्छं भास्ये ॥ हा क आ वे शे फो
प डि ली ॥ २२ ॥ ह्छं ह्छं आ स न व स न ॥ ह्छं रूप दी से भू ष ण ॥
भो व ते से व क त्व जं न ॥ दि स दी भी ह्छं रूप ते ॥ २३ ॥ स्ना न करा
व या कं स ॥ प उ द नी ये तां दे से स र्वे ह् ॥ उ द की दी से ह्छी के हा
जा ले मान स हा रि त्त प ॥ २४ ॥ वा व या बै स ला ङं नं ॥ तों वा
जा न्नां त दी से मन मो ह न ॥ कं स हा क फो डि ली दा र ण ॥ मु छी व
कु ण बो ल त से ॥ २५ ॥ ब हु त भो गी सी पुरु षा र्थ ॥ सो सी ये व टा मु छी
घा त ॥ आ वे शे भो जं न पा त्र फो डि ता ॥ अ न्नं वि ख र त च हुं क डो
॥ २६ ॥ रा गें कं स फी र वी न य ण ॥ ह्छे ण पा क क स सि जी वें मा रि ण ॥

(५९)



ॐ नमो मातृ मेळुण हृदयं ॥ माझा प्राण येवो पाहासी ॥ २७ ॥
प्राणनां सजाणीले उदक ॥ तो उदकी दिसे कमळा नायक ॥ कं
हो पात्र भिरका वीले देखा ॥ हाक फोडून ते धवां ॥ २४ ॥ हउ पिदेत विउ
या करणी ॥ कंस पाहे विडि उरु लुनि ॥ हंणे जात मेळ वीलाच
कपाणी ॥ तुमचे मणी म्या मरु ॥ २२ ॥ पुटे दाविले दर्पण ॥
जात बिबलाना रायण ॥ मरसा दिधला भीरका उण ॥ सेव
क ॥ जनहासति ॥ ३० ॥ पापवेदे साच मा ॥ हंणे जवधे चहेदावे
दासजाणी वेगं हास्य ॥ तो हास्य श्रीधर रूप दिसे ॥ ३१ ॥ हास्य
भीरका विले धाके ॥ हंणे कोटे माझे पाटी राखे ॥ मुदिकचा

(5)



ॐ

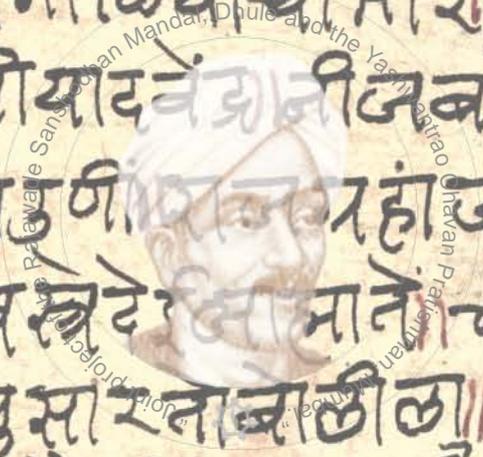
पुरादिकसखे ॥ कोटे गेले कळेना ॥ ३२ ॥ ॐ ना पुरा माजी प्रवे
 शला ॥ तो आनं तरुप स्त्रीयांचा मेळा ॥ हा कफे हुन बाहेर आ
 ला ॥ धा विरळ पकतसे ॥ ३३ ॥ पुं जा पजन कळनि कनीरा
 क ॥ अवधा व्यापी लघन नीक ॥ पद्यार्थ मात्र सकळ दिस ति
 गोपाक स्वरुपे ॥ ३४ ॥ त्रे स्वयं सदे शूकरुण ॥ कं सा सला
 गले हृष्यां ध्यां ना ॥ ३५ ॥ से वि कडे उपणी जग जीवण ॥ काय
 करि ना जाहाला ॥ ३५ ॥ ये क क्रम जी तेथे रजणी ॥ सर्वे च उ ग
 ॐ वला वासर मणी ॥ नीयने मसारि ला ते क्षणी ॥ नदा
 दि कीं ते धवां ॥ ३६ ॥ ह्यस्ये दृढ्या तली माळ गठि ॥ पदक
 पदक मुक्त हं रसक विकंठि ॥ दिव्य रत्ने शुक कति मुगटी

(5A)

व

बाहुवशीभुशणे ॥३७॥ वीरकंकणेमनेंठी ॥ दशांगेळिमुंठी
 काचिदाठि ॥ बकिरामासहितजगज्येठी ॥ रथावरिजा
 रुठला ॥३८॥ मागेगौकियाचाभारालागलावाद्याचाग
 जरा ॥ मथुरेमाजीयादवेद्रीनीजबळेसिप्रवेहाला ॥३९॥
 तोरजकवश्रेष्ठुणी ॥ यानगरहांजातद्येउणी ॥ यास
 ह्मणेमोक्षदाणी ॥ वस्त्रदेवतामार्ते ॥४०॥ तोसाचाभूयज
 वळिजालातदनुसारतावालीला ॥ ह्मणेवस्त्रंकायसी
 रातुजला ॥ गोरसचौगौकीया ॥४१॥ तुंनामध्येगोवळसि ॥
 बळकटपणेसोबिद्येसी ॥ तेथेथेनचलेमथुरेसि ॥

(6)



(6A)

जीवेजासि मास्याहाये ॥ ४२ ॥ तुवां जान्याय बहुतकेले ॥ ५४ ॥
 ण ठण कंस राये ॥ ५५ ॥ न विले ॥ जैसे जै कता गोपाके ॥ नवल
 केलेते येचि ॥ ५६ ॥ कवक्या लुनिनी जवळें ॥ राजकाचेंसी
 रखेदिले ॥ जैसे जै रविद खुडिले ॥ नखा ग्रीच जवळीके ॥ ५७ ॥
 वस्त्रेये उण समका गो कीया वा ठिते ॥ छछं नांथ ॥ तो वाठेसि
 सीपी भेठता ॥ तंतुवा नामतयाचें ॥ ५८ ॥ तेणे वस्त्रे जाणुन
 तेवेकां भावे पुजीले ॥ नसावका ॥ तो कुबी जा कंस दसी
 तेवेका ॥ दिशं चंदन भरुण कचोका ॥ वाटे सजाता देस्येद्य
 नसावका ॥ कवकपुतका मदनाचा ॥ ५९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नदादिन दयाका ॥ मरुण करि मजवरि ॥ ६० ॥ तो कुबी जा ॥

(७)

स

वी दृप दिसे वा पु डि ॥ कुरुप सवंगी वा कु डि ॥ परिस्तरि स्त पी
 तिणे गो डि ॥ नीज भावे सी धरी ली से ॥ ४५ ॥ हे चिरामावतारि
 चिमथु रा ॥ कै कै चिदा सी दे ही रघु वी रा ॥ रामे श्रापि ली सा ज
 वे श्व रा ॥ वक्र होय सवंगी ॥ ४६ ॥ मग ते ला ग ली राम च रणी ॥
 ह्रणे वर दे ई चा प णी ॥ राम ह्रणे पु ठे कं स स द नि ॥ दा सि हो
 सी कुरु प तुं ॥ ५० ॥ मी कं व व थ म थु रे सी ये ई ण ॥ ते द्वा तु ज
 वा ठे उ ध र ण ॥ असो ती स ह्रणे ज ग ज्जी व न ॥ चं द न दे ई
 आ ह्मा ते ॥ ५१ ॥ तो ते कु बि जा भा वा थे ॥ चं द न लां बी जा स
 ह से ॥ आव लो कि ता हा रि मु खाने ॥ स ह्म द ची ते जा हा ली ॥ ५२ ॥

श्रीजांगीचर्चुनीयांचंदनाकेलेहरिससाद्यंगनमनः
 हृद्योदिसहस्रीं धरुणलावीलाचरणशरिरा ॥ ५३ ॥ जैसा
 परिसरगटवांलोहाते ॥ वकाकसुवर्णहोयेतेथे ॥ तैसीपावलि
 दिव्यशरिराते ॥ जापांगपातेहरिच्या ॥ ५४ ॥ कीउगवतावासय
 मणी ॥ अंधःकारपळेसुळिहनी ॥ कीछळांचंद्रउगवतातेकु
 मोदिनी ॥ वीकासलिनेजतेजा ॥ ५५ ॥ जैस्यारंभाउवशीवीला
 सिणी ॥ तैसीचकुबिजादिव्यपद्मीणी ॥ हरिमुखन्याहाकी
 नयणी ॥ मंजुकवचनीबोळता ॥ धामीनकेवनमनमोह
 नमेधनामा ॥ हिमनगज्यामातामनवीशामा ॥ चालआ
 तामाश्रियानिंजधामा ॥ पुर्णकामासर्वेशा ॥ ५७ ॥ हरिहृणे
 कंसवधुनमगमीपाहिनवुझेसदना ॥ जैसेबोळतानंदनंदन

कुबी जा गे ली नी ज ग्रहा ॥ ५ ॥ तो फुल्लारि जों ते वे क क्षेणे हरी कं
 ठी घात ल्या माळा ॥ आवडी न मी न पदक मळा ॥ मिं लि द जै सा प्री ती ने
 ॥ १७ ॥ ह रि पु से लो का स वा ठो ध नु य गि द वा को ठो ॥ सो जा धी वी लो कु
 म ग ने ठो ॥ जा उ कं स म द विय ॥ १८ ॥ गा व त प्र वे ष ल शी प ति गो
 पि म थु रे च्या श्र व णी जै क ति स नु द हो उ न धा व ती ॥ ये दु प ति रा स
 व या ॥ १९ ॥ की ते का जे वि त हो सा न शी ॥ ते सा च क व क क रि वे गी
 धा व ति सुं द रि ॥ पु त ना पा हा व या ॥ २० ॥ ये कि स न ग न त ॥ के श र
 क लु रि मी श्री त ॥ चो ख णी सी री वा सी त ॥ ते सि च धा व त ग ज ग म
 ना ॥ २१ ॥ ये की गो पी जो कां उ त ॥ उ ध र्गै ल मु स का स हि त हा हा ॥ का
 मि नि जै क ता चि मा त धा वे व रि व ते सि ची ॥ २२ ॥ ये द की हो ती त

(४)

र

ॐ

(8A)

सुंदर॥ काणीजेको बालायेदुवीर॥ साहुनवाद्यदरघरा॥ जाय
 श्रीवरपाहावया॥ ६५॥ भुलवीलादृष्टोवेधके॥ पायिद्यातली
 कर्णताटके॥ चरणीचिभुषणेसुरेखे॥ कणीयकीव्यालितो॥ ६६॥
 जानं वठजोउविषोला॥ काणीबाबुलेयेकसरो॥ कंठीबाधली
 नेपुये॥ वाळेपैजनसमहा॥ ६७॥ मिसफुलचंद्रबिजवरा॥ गुठ
 गाबंधतिसुंदरा॥ धोसुबावीयापरकरा॥ चरणगुंष्टिगोविति॥ ६८॥
 मोतियाचिदिव्यबौजाळि॥ ६९॥ सतयकवेल्हाळि॥ नाकिचेमोतिचर
 णकेळि॥ धोठियाजवळिबांधिति॥ ७०॥ पेककाजळसुखिंधाळिता॥
 कुकुंजोळयामाजीलेत॥ जोउवेमुखासिमांखिता॥ हरिद्रालवित॥ पा
 यासी॥ ७०॥ कपुडिसुपारीद्योळिली॥ येकीनेकर्णामाजीद्यातली॥ वेणी
 सवीडियातहाकी॥ येकिखोवितिहुरेणे॥ ७१॥ येकलधंगीलेत

म

कंचुकि सुकृहारबाधेमस्तानिनेसते वस्त्रहस्तानि धावेये किचे
 उणिया ॥ ७२ ॥ वाककेठेउनसीक्यावरीकडियेचेनलिघागरियेक
 शडचक्राचेमाडियेवरिनेथुनरुलक्षिता ॥ ७३ ॥ येकिभक्तीच्याचौ
 वारां ॥ ७४ ॥ अहिल्यासुंदरी ॥ येकीसाधनाच्यामंदिरावरिचढेवेक
 कि ॥ ७५ ॥ येकध्यानाचेगवाभदरासावाटेउक्षीतियेदुविराये
 कलयेलाक्षाचेजाळांधरासावुनपाहेजगदात्मा ॥ ७६ ॥ क्षनयेक
 आयुशजाणुनजाउलादिबगेकाविप्रेमाचिगोडिवरिचढतां
 नांतडि ॥ पाहेव्यावजीहारिता ॥ ७७ ॥ ठाईठाईगोपीचेभारावर्षती
 तिसुमनाचेसंभारायेकीरुनदीपद्येउणसुंदरावोवाळितीपुरा
 णपुरुषा ॥ ७८ ॥ मदनमनोहरमेद्यशामादेखतागोपीसीथोर
 संभ्रमायेकसंणतिकोटिकामावोवाळावेयावरुणी ॥ ७९ ॥ येकीह

(9)

ॐ श्रीगुरुवाचसपुत्राय नमः ॥ सद्ये जावं वो कुनये की कामे विकृच्छपुण्ड्रि
 वदनवौलकिवां ॥ आसोधनुयगिमउपासमीप ॥ आलाचतुरास्या
 चाबाप ॥ जो माया नियंता चीत्तरूप ॥ कर्ममोचकमोक्षदाता ॥ ८० ॥ लोकं
 शुकुटिकेकेलेबउ ॥ लोहचतुरास्या ॥ जैसें पूर्वीत्रीब
 ककोदंडसीतावलभभगीदे ॥ ८१ ॥ तैसचीगजास्यतांतमीत्रे
 जाकणबोठुनकंजनेत्रे ॥ लोहचतुरास्या ॥ नक्षत्रमात्रे ॥ दोणीस
 कलेकेलीपै ॥ ८२ ॥ तेथेहेतदेसुरक्षक ॥ माहाउन्मत्तमद्यप्राशक
 परमदुर्मतिपीसीतभक्षक ॥ सहस्रेकधां विले ॥ ८३ ॥ राजजाशा
 मवेतांगोवके ॥ बकेलोहचापमोडीले ॥ हनौनिभववेचलोटले ॥ राम
 ह्मष्ठांवरिपै ॥ ८४ ॥ जैसें देखोनीरामवनमाळी ॥ कोदरखांडेहाती

(9A)

पं

(10)

हातिवैतली दोधे उठि ले प्रताप बळी ॥ को न आ क कि त या ते ॥ ८५ ॥ डे
 से उजा जाचे उभे जस ती भा रा ॥ नीः शंक उ ठ ति दो धे व्या द्य ॥ की दे खो
 णी वार ण चक्र ॥ जैसे मगे द च पे ट ति ॥ ८६ ॥ पु वी नी रा को दू व कुं म र
 देखो नि पि सि ता शी ता श ना चे भा रा धां वं ले जैसे प्र क य र द्रा तै से
 दो धे उ ठ ति ॥ ८७ ॥ र ण भे र व रो वे वा ण ॥ दो धे च नु ष्प र वं डे धे उ णः
 पा डि ले दै सु स मु क र्णे डु न ॥ ग त या ण स र्व जाले ॥ ८८ ॥ समा चार क
 क्क ठा कं सा श या ग मो डु न ॥ जित दै सा ती पर वु न गे ले मा गु ते डु
 उप व ना रा हा व या ॥ ८९ ॥ कु उ मं ड प वि चं सी ला ॥ र क्ष का चा सं क्कार
 के ला ॥ र ज क कौ की या मा रि ला ॥ क कि का कान जि तो ॥ ९० ॥ उप व णी
 क्र मु नी र ज णी ॥ स वे ची उ द या द्री व रि जाला त र णी ॥ नी सु

(10A)

२ श्रीदशमसंयोग ॥ श्रीसिद्धकुक्षुशरणकीपुस्तक
सप्ततिसप्त ॥ ७३ ॥

नेमसारणीततक्षणी ॥ सीधजालेसर्वहि ॥ ७१ ॥ भोगेद्रजाणी
यादवेन्द्र ॥ रथिनैसलेजैसेशशीदिनकर्यमागेगौळीयाचेभार
दृष्टांबकेसबळदिसो ॥ ७२ ॥ जैसाबवत्रासुरावरीपुरहत ॥ युध्या
नीचैद्येवैश्रवणबंधुबंधावया ॥ ७३ ॥ कीतारकासुरावरीकु
मार ॥ कीबंधकासुरावरिलपणनियतैसाचयदुकुकु
नापदिन ॥ कंसवधाचाळिल ॥ ७४ ॥ प्रतापतद्रदोद्येजणचा
लीलेराजविदिवरुण ॥ कंससंपांगतिचिचारजाठणयेत
दृष्टांतुसेभेठी ॥ ७५ ॥ कंसहृणकुवल्पद्विपपाठवावा ॥ दृष्टांमा
गीचियेताकोडावासंदिमाजीरगडावा ॥ माझनांगपदातकी ॥ ७६ ॥
ठाईठाईसाचेथने ॥ बिदोबिदिठभेकरावे ॥ जाह्नीमुष्टिकचा

(11)

पुरादिक आद्य वे। रंग मंडपी बैसतो ॥ ९७ ॥ कुवल्प माहाहस्ताथो
 याहृत्स सपाठ विलासमो य। सादितकोटी लयेवु विय। गौळिभारा
 समवेत ॥ ९८ ॥ कुवल्पावरि बैसला जो देस। तेणे गजलोठीला
 जाकस्मा व। गौळि जाले भयाभीत। हणती हस्तीहाना ठोपे ॥ ९९ ॥
 ह्यच्छं ह्मणे गज आकर्षका ते। मर्वा गज काठि जाणी क्यापंथे।
 नो ह्मणे तुज गज पदाखाल ते। बालुनियां रगडिना ॥ १०० ॥ गुरा
 रिया कपठ बळे। वणी माहायत मारीले। तैसे कुवल्प यासिन
 चले ॥ जवळी जाले मंरण तुझे ॥ १०१ ॥ तुंवां पुतना हो खुन मारि
 ली ॥ रनावर्त मारि लाजंतराकी ॥ गौवळ कुज ये स्खळि ॥ बळि
 रामा सहित मारिण ॥ २ ॥ काळिया जाणी जगसु ॥ कीरं उमा रण

(11A)

जालसी थोरा परि दुष्टा म ह सा चार ॥ ज व ली ला जी पा त ल ॥ ३ ॥
 व ग सु र प क्षी मारी ल ॥ कै शी या तो ज श्व ध रिल ॥ उँ से उँ क तां सा व
 का ॥ जै सा क्षो भ ल प्र क य रु द्र ॥ ४ ॥ ह्म णे म रु प का तुं आ णी ग ज ॥ म
 कु ण प्रा य दि स ति म ज ॥ जो तां च क्षे ण न ल ग ता तु ज ॥ म्ह यु पु रि स
 धा जी ना ॥ ५ ॥ जं उ ज प्र भु पु टे न ली का ॥ तै सा दि स रि तुं की ठ का ॥
 किं म्हे गें द्रा पु टे ॥ ज वि दे खा ज ता प बाले आ प ल ॥ ६ ॥ जा न वे दा सि
 बो ले प तं ग ॥ तु ज ग्रा सी या हा गे स व ग ॥ की श्रो त्री या पु टे मां ग ॥ ज
 चार व णी ज प ल ॥ ७ ॥ वी ढी भ श्च क का ग आ गं प न्ना ॥ राज हं सा स
 दा वि शा हा न प ण ॥ की नी नी सि का सो द र्य पु णी र वि व रा सी या वि
 ना ॥ ८ ॥ की मा हा उ र गा पु टे जां ण ॥ मु श क आ ठ व का रं ण ॥ की ल व
 ला



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com